'नवगीत' की विशेषताएँ

-- डॉ. कुमार धनंजय
सहायक प्राध्यापक (हिंदी विभाग)
पटना विमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना |
मोबाइल- 9958708550
Email- kumardhananjay007@gmail.com

हिंदी साहित्येतिहास में 'नवगीत' की परंपरा 1930 के दशक के मध्य में निर्मित होनी शुरू होती है और इसका विकास हमें दूर तक दिखाई पड़ता है| यद्यपि प्रारंभ में हमें 'नवगीत' नाम की कोई साहित्यिक प्रवृत्तिबोधक शब्दावली दिखाई नहीं देती है | यह नाम हमें 'नयी कविता' और 'नयी कहानी' के समानांतर ही दिखाई देता है | जिस प्रकार 'नयी कविता' ने परंपरागत कविता से अपने आप को अलग करने के लिए 'नयी' विशेषण का सहारा लिया उसी तरह 'नवगीत' ने अपने आप को स्थापित करने के लिए 'नव' एवं 'गीत' जैसे पदों का प्रयोग किया | यहाँ यह देखना दिलचस्प है कि 'गीत' कविता से अलग कुछ नहीं बल्कि कविता का ही एक रूप है जो पुराने समय से ही कविता के क्षेत्र में उपयोग में लाया जाता रहा है | साथ ही 'नवगीत' के लगभग साथ-साथ ही 'सप्तक' के कई कवियों ने गीतों की रचना की और ये कवि अपने को 'नवगीत' की परंपरा से अलग कर के देखते हैं | डॉ. शम्भुनाथ सिंह का मानना है कि नयी कविता और नवगीत में कोई मौलिक अंतर नहीं है | दोनों का स्थूल अंतर इतना ही है कि नयी कविता छंदमुक्त रूप में लिखी जाती है जबकि नवगीत छंदोबद्ध होता है | नयी कविता की तरह ही अपनी भाषागत विशेषता, भावगत आधुनिकता, प्रतीकों एवं बिम्बों की योजना के कारण नवगीत भी अन्य कविताओं से भिन्न है | इन गीतों के अन्दर आधुनिकता का एक संस्पर्श है जो इसे अन्य कविताओं से अलग कर देता है |

नवगीत के कुछ अध्येता एवं आलोचक भी इस परंपरा का प्रारंभ निराला में ढूँढने की कोशिश करते हैं परन्तु यह सत्य है कि इस परंपरा का विकसित अस्तित्व हमें 1950 के दशक में ही दिखाई पड़ता है और वह भिन्न परिप्रेक्ष्य में विकसित हुआ है | यह ठीक है कि निराला ने कई गीत लिखे हैं और उनके कई सारे गीत नवगीतों की संवेदना के निकट भी हैं परन्तु उन्हें नवगीत काव्यान्दोलन से जोड़ना उचित प्रतीत नहीं होता | नवगीत तो बाद में अपने विकसित रूप में सामने आता है और 1970 के दशक में इसमें और विषयगत वैविध्य दिखाई पड़ता है | इसी दौरान डॉ. शम्भुनाथ सिंह के संपादन में नवगीत दशक-1, नवगीत अर्धशती, आदि का प्रकाशन हुआ और नवगीत आन्दोलन अपने सीमित रूप में स्थापित हुआ |

अपने इन प्रभावों और प्रेरणाओं के बावजूद हमें नवगीत के कथ्य में कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएं भी दिखाई पड़ती हैं, जिसकी चर्चा यहाँ ज़रूरी है | नवगीतकारों ने प्रकृति को अपना काव्य-विषय बनाया लेकिन ध्यान देने योग्य बात यह है कि इनके प्रकृति-सौंदर्य की चेतना आंचलिकता का आधार लेकर विकसित हुई | यह हमारे आस-पास की प्रकृति है जिसमे भव्यता का कोई संस्पर्श नहीं है | एक कवि की काव्यपंक्तियाँ हैं-

"राह बनाती अपनी कुस-काँटों में संख सिवार में

कांदा-कीच पड़े रह जाते, लिपट-लिपटकर पाँव में"

आंचलिकता की यह प्रवृति हमें 'नयी कहानी' आन्दोलन में भी दिखाई पड़ती है लेकिन वहां यह विशेषता अंचल को ही नायक बना देती है | कविता में गद्य की यह सम्भावना मौजूद नहीं थी इसीलिए यहाँ पर आंचलिकता लोक-विश्वासों और लोक-चित्रों को उकेरने के क्रम में ही दिखाई देती है | नवगीतकारों ने अतीत को याद करने के क्रम में भी अपने अंचल और गाँव के चित्र प्रस्तुत किये हैं | डॉ. शम्भुनाथ सिंह ने लिखा है-

" चाँदी जैसी धूप

कभी नहीं अंट पाया

मेरे मन में इनका रूप

वे बचपन के खेल-खिलोने

डलिया मौनी सूप "

गीत एक ऐसी विधा है जिसमे प्रारंभ से ही प्रेम और सौंदर्य की अभिव्यक्ति होती रही है | गीतों की संरचना एवं गेयता इसे प्रेम की अभिव्यक्ति के लिए मुफीद बनती है | नवगीतों में भी प्रेम और उससे जुड़े हुए चित्र खूब उपस्थित हुए हैं | प्रारंभिक नवगीत उत्तर-छायावादी कविताओं से प्रभावित थे | इसका कारण उत्तर-छायावादी कविताओं की अप्रतिम लोकप्रियता थी | इन कविताओं ने मंचीय कविता को जन्म दिया था | हरिवंश राय बच्चन, गोपालदास नीरज आदि की कविताओं ने अभूतपूर्व लोकप्रियता प्राप्त की थी जिसमे प्रेम की वैयक्तिकता एवं मांसलता को जगह मिली थी | नवगीतकारों ने पहले तो इनसे प्रेरणा प्राप्त की परन्तु जल्द ही अपने काव्यान्दोलन को स्वायत्त स्वरुप देने के लिए अपने स्वर को अलग किया | अब इनकी प्रेमाभिव्यक्ति में दर्द एवं एकाकीपन का समावेश होने लगा | बुद्धिनाथ मिश्र जी अपनी कविता में लिखते हैं-

" एक बार और जाल फेंक रे मछेरे

जाने किस मछली में बंधन की चाह हो "

सन 50 के बाद जब नवगीत परिपक्व होने लगता है तब हम यह देखते हैं कि इनके प्रेम-चित्रण में रोमांटिकता, मांसलता आदि का चित्रण कम होने लगता है और उसकी जगह अनुभूति की गहराई ले लेती है |

गीत शब्द के प्रयोग से प्रायः ऐसा मान लिया जाता है कि इसमें भावप्रवणता एवं संवेदनात्मकता तो होगी परन्तु इसमें युग-बोध के यथार्थ का वहन करने की क्षमता नहीं होगी | लेकिन, नवगीत के मामले में ऐसा नहीं है | नवगीत की कविताओं का एक हिस्सा ऐसा भी है जो अपने समय के सामाजिक-यथार्थ का अंकन करता है | नवगीत के विकास का भी वही समय है जो नयी कविता आन्दोलन का है | इसीलिए इसमें भी वही काव्य-

वस्तु दिखाई पड़ती है | यहाँ भी वही महानगरीय जीवन-बोध, कुंठा, संत्रास एवं अकेलेपन की अभिव्यक्ति हुई है | कुमार शिव की गीत की निम्नलिखित काव्य-पंक्तियाँ देखिये-

"नाच रहे हम तकली जैसे

बज उठते हम ढपली जैसे

हँसते हैं पर हैं उदास "

यदि हम नवगीत के शिल्प पर बात करें तो यहाँ कुछ दिलचस्प संकेत नज़र आते हैं | सर्वप्रथम तो ये कि 'नवगीत' नाम ही अपने आप में शिल्प से सम्बंधित है | अर्थ यह कि इस शब्द से हमें अंतर्वस्तु-सम्बन्धी किसी विशेषता का पता नहीं चलता | यह मूलतः शिल्प-केन्द्रित शब्द है | गीत में एक किस्म की गेयता होती है अर्थात यह संगीत का आधार लेकर चलता है | अतः हम संगीतबद्धता अथवा छंदोबद्धता को भी इस काव्यान्दोलन की एक विशेषता मान सकते हैं | हिंदी-कविता जबसे छंदमुक्तता की ओर अग्रसर हुई है, उसे एक क्षति यह पहुंची है कि उसका मौखिक-आधार ग़ायब हो गया है और वह अपेक्षाकृत कम दीर्घजीवी हो गयी है | शुक्ल जी की उद्घोषणा ," छंद से कविता की आयु बढ़ती है "- यहाँ सही साबित हुई है | एक बात और, छंदमुक्त कविता से कविता चाँद पढ़े-लिखे लोगों द्वारा व्यवहृत होने लगी है और सामान्य-जन से उसका रिश्ता टूटने लगा है | नवगीत का यह एक महत्वपूर्ण काम यह है कि उसके द्वारा कविता में छंद का पुनर्वास संभव हो सका | इससे कविता दीर्घजीवी हुई और लोक-जीवन से उसका जुड़ाव संभव हो सका | आज कविता के कई आलोचक नवगीत को मुख्यधारा की कविता के रूप में स्वीकार नहीं करते लेकिन ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में ही सही 'नवगीत' ने हिंदी कविता के परिसर में जो अपनी उपस्थिति दर्ज की है, उससे इनकार नहीं किया जा सकता |